पाठ–4

दीनों पर प्रेम

वियोगी हरि

जन्म– 1895 ई.

मृत्यु– 1988 ई.

लेखक परिचय

प्रतिभा सम्पन्न वियोगी हरि की रुचि बाल्यकाल से ही साहित्य और दर्शन में थी, जिसे बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन के सम्पर्क से विशेष प्रोत्साहन मिला। गाँधी जी से प्रभावित होकर अस्पृश्यता निवारण की दिशा में 1920 में कानपुर के 'प्रताप' में एक लेख माला लिखी थी।

इन्होंने गाँधी जी द्वारा प्रवर्तित 'हरिजन सेवक' के सम्पादन का कार्य भी सम्भाला और तभी से हरिजन सेवक संघ से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। वियोगी हरि के सामाजिक विचार सुधारवादी और कबीर आदि सन्तों की भाँति खण्डनात्मक है। उनके गद्य गीत, चिन्तन प्रधान एवं व्यंग्यात्मक है।

गद्य भाषा अलंकृत, काव्यात्मक, लाक्षणिक और मिश्रित है। वियोगी हरि आधुनिक ब्रजभाषा के प्रमुख कवि, हिन्दी के सफल गद्यकार और समाजसेवी हैं। वर्ण्य विषय के अनुरूप हिन्दी संस्कृत की काव्योक्तियाँ उद्धृत कर उन्होंने अपने निबन्धों को प्रभावशाली बनाया है।

कृतियाँ

साहित्य विहार, वीर सतसई, मेवाड़ केसरी, प्रेम शतक, प्रेम पथिक, सन्त–वाणी, वीर विरुदावली, चरखे की गूँज, संक्षिप्त सूर सागर, सन्त–सुधासार ।

पाठ परिचय

प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने दीन–दुखियों की सेवा को ही ईश्वर सेवा सिद्ध किया है। जो लोग बड़े–बड़े उपासना गृह बनाकर चमक–दमक पूर्ण रीति से ईश्वर की पूजा करते हैं और दीनों के दुःख –दर्द को सुनकर उनसे घृणा करते हैं, उनकी भक्ति को ईश्वर स्वीकार नहीं करता है। ईश्वर दीनबन्धु है, वह दरिद्र–नारायण है। जो लोग उसे लक्ष्मी–नारायण ही समझते हैं, वे उसके रहस्य से परिचित नहीं हैं। इस विषय में अनेक उद्धरण देते हुए लेखक ने आस्तिकों को दीनों से प्रेम करने की प्रेरणा दी है।

लेखक के कहने का अभिप्राय यह है कि केवल नाम के आस्तिक बनने से कुछ भी नहीं सध पाता, जब तक अपनी आस्तिकता को दुःखियों की सेवा और सहायता में चरितार्थ न किया जाए।

दीनों पर प्रेम

हम नाम के ही आस्तिक हैं। हर बात में ईश्वर का तिरस्कार करके ही हमने आस्तिक की ऊँची उपाधि पाई है। ईश्वर का नाम दीनबन्धु है। यदि हम वास्तव में आस्तिक हैं, ईश्वर भक्त हैं तो हमारा यह पहला धर्म है कि दीनों को प्रेम से गले लगाएँ, उनकी सहायता करें, उनकी सेवा करें, उनकी शुश्रूषा करें।

तभी तो दीनबन्धु ईश्वर हम पर प्रसन्न होगा। पर हम ऐसा कब करते हैं ? हम तो दीन–दुर्बलों को ठुकराकर ही आस्तिक या दीन–बन्धु भगवान के भक्त आज बन बैठे हैं। दीन–बन्धु की ओट में हम दीनों का खासा शिकार खेल रहे हैं। कैसे अद्वितीय आस्तिक हैं हम, न जाने क्या समझकर हम अपने कल्पित ईश्वर का नाम दीन बन्धु रखे हुए हैं, क्यों इस रद्दी नाम से उस लक्ष्मी–कान्त का स्मरण करते हैं :

दीननि देख घिनात जे, नहिं दीननि सो काम।
कहा जानि ते लेत है, दीनबन्धु को नाम।।

यह हमने सुना अवश्य है कि त्रिलोकेश्वर श्री कृष्ण की मित्रता और प्रीति सुदामा नाम के एक दीन दुर्बल ब्राह्मण से थी। यह भी सुना है कि भगवान यदुराज ने महाराज दुर्योधन का अतुल आतिथ्य अस्वीकार कर बड़े प्रेम से गरीब विदुर के यहाँ साग–भाजी का भोग लगाया था। पर ये बातें चित्त पर कुछ बैठती नहीं हैं। रहा हो, कभी ईश्वर का दीनबन्धु नाम पुरानी, सनातनी बात है, कौन काटे ? पर हमारा भगवान दीनों का भगवान नहीं है।

हरे, हरे! वह उन घिनौनी कुटियों में रहने जाएगा? रत्न जड़ित स्वर्ण–सिंहासन पर विराजने वाला ईश्वर उन भुक्कड कँगालों के कटे–फटे कंबलों पर बैठने जाएगा? वह मालपुआ और मोहन भोग लगाने वाला भगवान उन भिखारियों की रूखी–सूखी रोटी खाने जाएगा ? कभी नहीं हो सकता । हम अपने बनवाए हुए विशाल राजमन्दिर में उन दीन–दुर्बलों को आने भी नहीं देंगे। उन पतितों और अछूतों की छाया तक हम अपने खरीदे हुए खास ईश्वर पर न पड़ने देंगे। दीन–दुर्बल भी कहीं ईश्वर भक्त होते सुने हैं ? ठहरो, ठहरो, यह कौन गा रहा है ? ठहरो, जरा सुनो, वाह! तब यह खूब रहा :

मैं ढूँढता तुझे था, जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में।
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में।

तो क्या हमारे श्री लक्ष्मी–नारायण, जो 'दरिद्रनारायण' हैं ? इस फ़कीर की सदा से तो यही मालूम हो रहा है। तो क्या हम भ्रम में थे ? अच्छा, अमीरों के शाही महलों में वह पैर भी नहीं रखता ?

मेरे लिए खड़ा था, दुखिया के द्वार पर तू,
मैं बाट जोहता था तेरी, किसी चमन में।
हज़रत खड़े भी, कहाँ होने गये ?

बेबस गिरे हुओं के तू बीच में खड़ा था,

मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरण में।।

तो क्या उस दीनबन्धु को अब यही मंजूर है कि हम अमीर लोग धन दौलत को लात मारकर उसकी खोज में दीन–हीनों की झोपड़ियों की खाक छानते फिरें?

× × × ×

दीन–दुर्बलों को अपने असह्य अत्याचारों की चक्की में पीसने वाला धनी परमात्मा के चरणों तक कैसे पहुँच सकता है? धनान्ध को स्वर्ग का द्वार दिखेगा ही नहीं, महात्मा ईसा का यह वचन क्या असत्य है ?

''यदि तू सिद्ध पुरुष होना चाहता है तो जो कुछ धन दौलत तेरे पास हो, वह सब बेचकर कँगालों को दे दे। तुझे अपना खज़ाना स्वर्ग में सुरक्षित रखा मिलेगा। तब, आ और मेरा अनुयायी हो जा। मैं तुझसे सच कहता हूँ कि धनवान के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने की अपेक्षा ऊँट का सुई के छेद में से निकल जाना कहीं आसान है। सहजो बाई भी यही बात कह रही है :

बड़ा न जाने साहिब के दरबार ।

द्वारे ही सूं सहजो मोटी मार।।

किसानों और मजदूरों की टूटी–फूटी झोंपड़ियों में ही प्यारा गोपाल बंशी बजाता मिलेगा। वहाँ जाओ उसकी मोहिनी छवि निरखो। जेठ–बैशाख की कड़ी धूप में मजदूर के पसीने की टपकती हुई बूँदों में उस प्यारे राम को देखो। दीन–दुर्बलों की निराशा भरी आँखों में उस प्यारे कृष्ण को देखो। किसी धूल भरे हीरे की कणी में उस सिरजनहार को देखो । जाओ, पतित, अछूत की छाया में उस बिहारी को देखो।

× × × ×

तुम न जाने उसे कहाँ खोज रहे हो ? अरे भाई! वहाँ वह कहाँ मिलेगा ? इन मन्दिरों में वह राम न मिलेगा, इन मस्जिदों में अल्लाह का दीदार मुश्किल है। इन गिरजों में कहाँ परमात्मा का वास है ? इन तीनों में वह मालिक रमने का नहीं। गाने बजाने से भी वह रीझने का नहीं। अरे! इन सब चटक मटक में वह कहाँ ? वह दुखियों की आह में मिलेगा। गरीबों की भूख में मिलेगा। दीनों के दुःख में मिलेगा। वहाँ तुम खोजने आते नहीं, यहाँ व्यर्थ फिरते हो।

दीनबन्धु का निवास स्थान दीन हृदय है। दीन हृदय ही मन्दिर है, दीन हृदय ही गिरजा है। दीन दुर्बल की दिल दुखाना भगवान का मन्दिर ढहाना है। दीन को सताना सबसे भारी धर्म–विद्रोह है। दीन की आह समस्त धर्म–कर्म को भस्मसात् कर देने वाली है। सन्त कवि मलूकदास ने कहा है –

दुखिया जनि कोई दूखिये दुखियै अति दुःख होय।

दुखिया रोई सब गुड़ माटी होय।।

दीनों को सताकर, उनकी आह से कौन मूर्ख अपने जीवन को नारकीय बनाना चाहेगा, कौन ईश्वर–विद्रोह करने का दुस्साहस करेगा ? गरीब की यह आह भला कभी निष्फल जा सकती है –

तुलसी हाय गरीब की, कबहुं न निष्फल न जाय।
मरे बैल की चाम सों, लौह भस्म ह्वै जाय।।

और की बात नहीं जानते, पर जिसके हृदय में थोड़ा सा भी प्रेम है, वह दीन– दुर्बलों को कभी सता ही नहीं सकता। प्रेमी, निर्दय कैसे हो सकता है उसका उदार हृदय तो दया का आगार होता है। दीनों को वह अपनी प्रेममयी दया का सबसे बड़ा और पवित्र पात्र समझता है। दीन के सकरुण नेत्रों में उसे अपने प्रेम देव की मनमोहिनी मूर्ति का दर्शन अनायास प्राप्त हो जाता है। दीन की मर्मभेदिनी आह में उस पागल को अपने प्रियतम का मधुर आह्वान सुनाई देता है। उधर वह अपने दिल का दरवाजा दीन–हीनों के लिए रात–दिन खोले खड़ा रहता है और उधर परमात्मा का हृदय द्वार उस दीन–प्रेमी का स्वागत करने को उत्सुक रहा करता है।

प्रेमी का हृदय दीनों का भवन है, दीनों का हृदय दीनबन्धु भगवान का मन्दिर है और भगवान का हृदय प्रेमी का वास–स्थान है। प्रेमी के हृदय में दरिद्र–नारायण ही एक मात्र प्रेम–पात्र है। दरिद्र सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है। दीन–दयालु ही आस्तिक है, ज्ञानी है, भक्त है और प्रेमी है। दीन दुखियों के दर्द का मर्मी ही महात्मा है। गरीबों की पीर जानने–हारा ही सच्चा पीर है। कबीर ने कहा है :

कबिरा सोई पीर है , जो जाने पर पीर
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर।।

शब्दार्थ

आस्तिक–ईश्वर में विश्वास रखने वाले,
अद्वितीय– जिसके समान दूसरा कोई न हो,
घिनात–घृणा या नफरत करना,
रत्न जड़ित– रत्नों से जड़ा हुआ,
असह्य– जो सहन न किया जा सके,
जोहना– इन्तजार करना,
तिरस्कार–अनादर,
आतिथ्य–अतिथि का सत्कार,
दीदार–दर्शन,
आगार–भण्डार।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ईश्वर का असली निवास कहाँ है?

क. मन्दिर–मस्ज़िद में
ख. अमीरों के महलों में
ग. दीन–दुःखियों के झोंपड़ों में
घ. धार्मिक समारोहों में

2. हमारे कल्पित ईश्वर का नाम क्या है?

क. दीन–बन्धु ख. लक्ष्मी नारायण

ग. त्रिलोकपति घ. रसिक बिहारी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. 'हम नाम के आस्तिक है।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

4. दीनों की सेवा न करने वाले व्यक्ति को लेखक आस्तिक क्यों नहीं मानता है?

5. संधि विच्छेद कीजिये–

त्रिलोकेश्वर, अत्याचार, परमात्मा, महात्मा।

6 निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह कीजिये तथा समास का नाम बतलाइये

दीन–दुःखी, दीन–बन्धु, रत्नजड़ित, स्वर्ण–सिंहासन, ईश्वरभक्त, दरिद्र– नारायण, धन–दौलत, धर्म–कर्म , टूटी–फूटी, राज–मन्दिर ।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7. धनी व्यक्ति के स्वर्ग–प्रवेश के बारे में महात्मा ईसा के क्या विचार है ?

8. अब ''लक्ष्मी–नारायण'' को ''दरिद्र–नारायण'' बनाना ही पड़ेगा, क्यों और किस प्रकार ?

9. 'दीन–दुर्बल' का दिल दुःखाना भगवान का मन्दिर ढहाना है।' लेखक के उक्त विचार की समीक्षा कीजिए ?

10. 'मरे बैल की चाम सों लौह भस्म ह्वै जाय'। 'मरे बैल के चमड़े' से 'लोहे के भस्म' होने के कथन का क्या आशय है ?

निबन्धात्मक प्रश्न

11. 'दरिद्र की सेवा ही सच्ची सेवा है' लगभग 200 शब्दों में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

12. भावार्थ स्पष्ट कीजिए –

I दीन–दुःखियों के दर्द का मर्मी ही महात्मा है।

II दीन–बन्धु की ओट में हम दीनों का खासा शिकार खेल रहे हैं।

III प्रेमी का उदार हृदय तो दया का आगार होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1 ग

2 क